अनुबंध I

(पैरा सी.2 देखें)

प्राधिकृत व्यापारियों की विदेशी मुद्रा एक्सपोजर सीमाओं के लिए दिशानिर्देश

1. कवरेज

भारत में निगमित बैंकों के लिए, प्रबंधन द्वारा निर्धारित एक्सपोजर सीमा उनकी विदेशी शाखाओं सहित सभी शाखाओं के लिए समग्र होनी चाहिए। विदेशी बैंकों के लिए, सीमाएं केवल भारत में उनकी शाखाओं को कवर करेंगी।

2. पूंजी

पूंजी भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार टीयर I पूंजी को संदर्भित करती है।

3. एकल मुद्रा में निवल खुली स्थिति की गणना

खुली स्थिति को पहले प्रत्येक विदेशी मुद्रा के लिए अलग से मापा जाना चाहिए। किसी मुद्रा में ओपन पोजीशन (ए) नेट स्पॉट पोजीशन, (बी) नेट फॉरवर्ड पोजीशन और (सी) नेट ऑप्शंस पोजीशन का योग है।

ए) नेट स्पॉट पोजीशन

तुलन पत्र में विदेशी मुद्रा आस्तियों और देयताओं के बीच का अंतर नेट स्पॉट पोजीशन है। इसमें सभी उपार्जित आय/व्यय शामिल होने चाहिए।

बी) नेट फॉरवर्ड पोजीशन

यह पूरा किए गए विदेशी मुद्रा लेनदेनों के परिणामस्वरूप भविष्य में भुगतान की जाने वाली सभी राशियों को घटाकर प्राप्त की जाने वाली कुल राशि को दर्शाता है। ये लेनदेन, जो बैंक की बहियों में तुलन-पत्र से इतर मदों के रूप में दर्ज हैं, में निम्नलिखित शामिल होंगे:

(i) स्पॉट ट्रांजैक्शन, जिनका निपटान अभी तक नहीं हुआ है;

(ii) फॉरवर्ड लेनदेन;

(iii) विदेशी मुद्राओं में मूल्यवर्गित गारंटी और समान प्रतिबद्धताएं जिन्हें निश्चित रूप से कॉल किया जाना है;

(iv) करेंसी फ्यूचर्स के संबंध में प्राप्त/भुगतान की जाने वाली राशि में से करेंसी फ्यूचर्स/स्वैप पर मूलधन को घटाकर प्राप्त होने वाली राशि।

सी) ऑप्शंस पोजीशन

ऑप्शंस पोजीशन "डेल्टा-समतुल्य" स्पॉट करेंसी पोजीशन है जैसा कि प्राधिकृत व्यापारी के ऑप्शंस जोखिम प्रबंधन प्रणाली में परिलक्षित होता है, और इसमें उन डेल्टा हेजेज को शामिल किया गया है जिन्हें पहले से ही 3 (ए) या 3

(बी) (i) और (ii) के तहत शामिल नहीं किया गया है।

4. समग्र रूप से निवल खुली स्थिति की गणना

इसमें विभिन्न मुद्राओं में बैंक की लॉन्ग और शॉर्ट पोजीशन के मिश्रण में निहित जोखिमों का आकलन शामिल है। यह निर्णय लिया गया है कि "शॉर्टहैंड विधि" अपनाई जाए जिसे समग्र रूप से निवल खुली स्थिति तक पहुंचने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जाता है। इसलिए, बैंक समग्र रूप से निवल खुली स्थिति की गणना निम्नानुसार कर सकते हैं:

(i) प्रत्येक मुद्रा में निवल खुली स्थिति की गणना करना (उपर्युक्त पैरा 3)।

(ii) स्वर्ण में निवल खुली स्थिति की गणना करना।

(iii) मौजूदा आरबीआई/फेडाई दिशानिर्देशों के अनुसार विभिन्न मुद्राओं और सोने की निवल स्थिति को रुपये में परिवर्तित करना।

(iv) सभी नेट शॉर्ट पोजीशन के योग तक पहुंचना।

(v) सभी नेट लॉन्ग पोजीशन के योग तक पहुँचना।

समग्र रूप से निवल विदेशी मुद्रा की स्थिति (iv) या (v) में से उच्चतर है। उपर्युक्त के अनुसार निकाले गए समग्र निवल विदेशी मुद्रा की स्थिति को रिज़र्व बैंक द्वारा अनुमोदित सीमा के भीतर रखा जाना अनिवार्य है ।

5. पूंजीगत अपेक्षा

रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर किए गए निर्धारण के अनुसार।